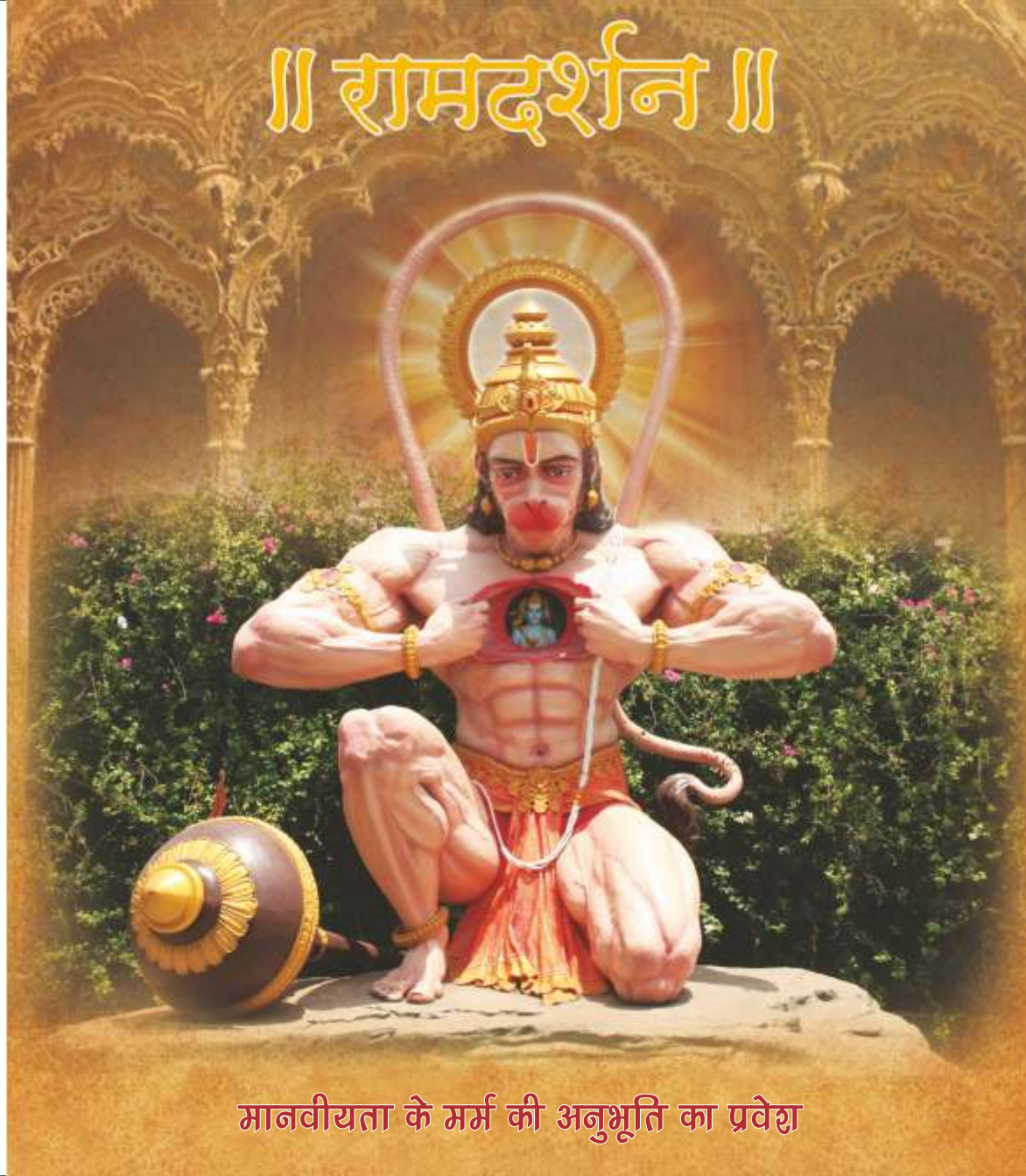


श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

# ॥ रामदर्शन ॥



श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

मानवीयता के मर्म की अनुभूति का प्रवेश



सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया

## सेठ मुंगतूराम जैपुरिया की पुण्यस्मृती में उनके सुपुत्र डॉ. राजाराम जैपुरिया के सौजन्य से

चित्रकूट माँ मंदाकिनी के सुरम्य तट पर पौराणिक विंध्याचल की हरी-भरी गोद में, नन्ही सी आबादी के रूप में बसा है। वनवासी राम की यह कर्मभूमि रही है। इस कारण चित्रकूट असंख्य भक्तजनों का अनोखा तीर्थ बना है।

माता-पिता के सर्वाधिक प्रिय कुलभूषण सुपुत्र, बंधु-बांधवों तथा दीन-दुखियों के प्राणप्रिय सखा, सीता के स्नेहशील व कर्तव्यनिष्ठ पति, साहस एवं पराक्रम के अद्वितीय योद्धा, मनमोहक व्यक्तित्व के अनुपम प्रतीक, सर्वसाधारण जनों के सर्वप्रिय व सफलतम शासक तथा विश्ववंध मर्यादा पुरुषोत्तम राम स्वयं के कर्तव्य से मानव मात्र के लिए आदर्श बने हुए हैं। अनेक युग बीत जाने पर भी प्रभु राम के प्रति जनमानस में जमी हुई श्रद्धा पूर्ववत् ताजगी लिए विद्यमान है। यही है अपने देश की श्रेष्ठतम धरोहर।

ऐसे ही मानव जीवन के विश्वव्यापी प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का दर्शन कीजिए और उनके जीवन से प्रेरणा पाकर अपने जीवन को सार्थक बनाइये। इस भाव को लेकर दीनदयाल शोध संस्थान ने पद्मभूषण सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र डॉ. राजाराम जैपुरिया के सौजन्य से रामदर्शन का निर्माण कराया गया, जिसमें तीन प्रकार की कलाकृतियों - डायोरामा, पेन्टिंग, रिलीफ के माध्यम से श्रीराम के जीवन चरित्र का प्रदर्शन किया गया है।

विश्वविख्यात विद्वान पं. राम शेवालकर प्रकल्प के मार्गदर्शक हैं। अर्बन सिस्टम के सुप्रसिद्ध वास्तुकला विशेषज्ञ श्री पुनीत एवं श्रीमती किरण सोहेल वास्तुकार हैं। कला शिरोमणि श्री सुहास बहुलकर एवं उनके सहयोगी शिल्पकार अशोक सोनकुसरे तथा अन्य कलाकार विभिन्न कलाकृतियों के निर्माता हैं।

- नाना देशमुख



तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के साथ डॉ. राजाराम जैपुरिया रामदर्शन कराते हुए..

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

## कृपया पधारिये

मानवीय आचरण के विश्वव्यापी प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम राम का दर्शन कीजिये  
और उनके जीवन से प्रेरणा पाकर अपना जीवन सार्थक बनाइये

Welcome

To have Darshan of Maryada Purshottam Ram the universal source of human behaviour  
get inspiration from his life mission and mould your vision of life accordingly



महर्षि वाल्मीकि



संत तुलसीदास



## राम का विश्वव्यापी प्रभाव



लक्ष्मण



राम



हनुमान



युद्धरत राम-रावण



रावण



कोरियाई भाषा में  
वाल्मिकी रामायण



चित्रों में थर्डलैण्ड रामायण  
(रामकियन)

श्रीराम किसी देश की सीमा में या विशेष संप्रदाय में बंधे हुए नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के मन-मस्तिष्क में समाये हुए है। यह दर्शाता हुआ रामदर्शन का प्रथम मंदिर जिसमें श्रीराम के विश्वव्यापी प्रभाव और प्रतीकों का तथा विभिन्न भाषाओं में रामायण के ग्रंथों का प्रस्तुतिकरण किया गया है।

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम





डायोरामा

गुरुकुल

१०' X ३०' X ११'

विश्वविद्यालय से उपाधियाँ पाकर या आजीविका की क्षमता अर्जित कर स्वयं को शिक्षित मानना अपने आपको धोखा देना है। इससे तो मानव पशु समान स्वार्थ पूर्ति में ही आजीवन लगा रहता है। वस्तुतः शिक्षा का लक्ष्य है मानव संतान को मानवीय गुणों से सम्पन्न करना। ऐसी ही शिक्षा पाते हुए गुरु वशिष्ठ के आश्रम में राजा दशरथ के पुत्र।

Education is not merely acquiring information and an ability to earn a Living. This only fosters individualism. To inculcate humane qualities in the new generation, complementarily should be recognized as the real essence of education by our teachers. Raja Dashratha's sons received this kind of education in guru Vashishtha's ashram.



चित्र

मुनि विश्वामित्र द्वारा राम-लक्ष्मण की माँग

६' x ८'

उन्मत्त दानवों के आक्रमणों से यज्ञों की रक्षा करने के लिए विश्वामित्र ने युवराज राम की माँग की। पुत्र मोह के वशीभूत राजा दशरथ पसोपेश में पड़े। गुरु वशिष्ठ ने राजधर्म पालन का संकेत किया। फलस्वरूप, विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण भेजे गये।

- Rishi Vishwamitra Wanted Ram's assistance to protect his Yajna from an attack by a group of dreadful demons. But because of his paternal affection for his sons, Raja Dashratha was in a dilemma. Guru Vashishtha reminded him Royal Duty, after which the King allowed Ram and Lakshman to go with Rishi Vishwamitra.



रिलीफ

रामकी प्रतिज्ञा

७.८' X ११'

सिद्धाश्रम जाते समय राह में राक्षसों द्वारा किये गये अत्याचारों के हृदयविदारक दृश्य दिखाई दिये। निरपराध मानवों के कंकालों के ढेर देख, राम ने प्रण किया - “प्राण की भी बाजी लगाकर मैं आततायियों का निर्मूलन करूँगा”।

On the way to Siddhashram, the boys saw heart-rendering scenes caused by the atrocities of the demons. After he saw a huge pile of skeletons, the innocent victims of the demons, Ram took a vow- "I will wipe out all these tyrants from the world with all my might".





सिद्धाश्रम जाते हुए महाभयानक राक्षसी ताडका ने नवयुवक राम पर अचानक आक्रमण किया। सतर्क एवं सिद्धहस्त राम ने अपने बाण से उसे यमसदन पहुँचाया। आततायी पुरुष हो या स्त्री उसे मृत्युदंड देना ही मानव धर्म है।

On the way to Siddashram, the gigantic and dreadful demoness, Trataka, suddenly attacked young Ram. Alert and consummately skilled, Ram killed her with a single arrow. Whether it is a man or a woman, a tyrant's annihilation is a sacred duty for all of us.



चित्र

सिद्धाश्रम में राम-लक्ष्मण

६' X १०'

राम ने कहा - “हम दोनों भाई ही सभी राक्षसों का सफाया कर देंगे।” विश्वामित्र ने कहा - “तुम्हारे सामर्थ्य में मुझे संदेह नहीं है। किन्तु यह उपाय स्थायी नहीं होगा। स्थानीय लोगों में पराक्रम एवं आत्मविश्वास जगाते हुए अत्याचार सहने की उनकी आदत मिटाना ही दूरदृष्टि संपन्न नेतृत्व की विशेषता होती है।”

Ram assured Rishi Vishwamitra that he and Lakshman alone would wipe out all the demons. Rishi Vishwamitra responded, 'I do not doubt your valour, but this is not a permanent solution. It is essential to inspire confidence and bravery in the local people so they will not tolerate my form of oppression. This is the way of true leadership.'



चित्र

भ्रष्ट प्रशासनिक अधिकारियों को शासन

६' X १०'

स्वार्थी प्रशासक भ्रष्टाचारियों को संरक्षण देते रहते थे। नागरिकों को अन्याय और अत्याचार सहने पड़ते थे। राम ने ऐसे भ्रष्ट उच्च पदाधिकारी बहुलाश्व को प्राणदंड देकर प्रशासन को भ्रष्टाचार से मुक्त किया। राम-राज्य की यह विशेषता थी।

The common people suffered as greedy administrators protected the corrupt. Ram could not tolerate this. He sentenced the highly placed official, Bahulashwa, to death, and set an example for other rulers to follow. This was the unique feature of Ram Rajya.





रिलीफ

पीड़ित महिलाओं का उद्धार

१०' X १०'

युवतियों पर बलात्कार करना दानवों का खेल बना था। ऐसी पीड़ित बालाओं के लिए न समाज में स्थान बचा था न ही अपने परिवारों में। उनकी दयनीय दशा से राम व्यथित हुए। उन्होंने पीड़ित युवतियों को समझाया कि इसमें उनका कोई दोष नहीं है। बलात्कारी राक्षस अब मुझसे बच नहीं पायेंगे। राम ने अपने प्रभाव से इन पीड़ित युवतियों को समाज में उचित स्थान दिलाया।

Demons physically abused young women for their pleasure. These afflicted girls were ostracised by their own families and society. Their condition perturbed Ram. He consoled the young women, and told them not to blame themselves for their plight. After wiping out these demons, he restored their honour to them.



चित्र

अहिल्या उद्धार

६' x ८'

महर्षि गौतम की रूपवती पत्नी अहिल्या को अकेली पाकर इन्द्र ने उसका शील भंग किया। क्रुद्ध गौतम उसे शाप देकर आश्रम छोड़ चले गए। मिथिला जाते समय वह आश्रम रास्ते में ही था। निराहारी अहिल्या ध्यान मग्न थी। उसकी आँखें खुली तो उसे राम का दर्शन हुआ। अनुकूल अवसर पाकर राम ने अहिल्या-गौतम का पुनर्मिलन कराया।

Ahalya, the wife of Rishi Gautam, was an exceptional beauty. Indra molested her when she was alone. An irate Rishi Gautam abandoned her and left the Ashram. The Ashram was on the way to Mithila. On his way to Mithila, Ram saw Ahalya in meditation. When she opened her eyes, she was over whelmed to have Ram's Darshan. Ram paid his respects to her. At an opportune time, he reunited Ahalya and Rishi Gautam.



चित्र

सीता स्वयंवर

६' x ८'

विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण मिथिला पहुँचे। सीता स्वयंवर आयोजित था। विशाल शिव-धनुष पर प्रत्यूँचा चढ़ानी थी। सभी राजे-महाराजे विफल हुए। राजा जनक चिंतित हुए। विश्वामित्र ने राम को इशारा किया। राम ने प्रत्यूँचा चढ़ायी तो शिव-धनुष टूट गया। हर्षोल्लास के वातावरण में सीता ने राम को वरमाला पहनायी।

Rishi Vishwamitra took Ram and Lakshman to Mithila where the Swayamwar ceremony for Sita was to take place. The condition for her hand was to string the great bow, Shiv Dhanush. After all the kings failed in their attempts, Raja Janak got worried. Rishi Vishwamitra asked Ram to do it. Ram strung Shiv Dhanush, breaking the great bow in the process. In a joyous atmosphere, Sita garlanded Ram.





रिलीफ

राम परशुराम संवाद - विनयशील वाणी का प्रभाव

६.११' X ९.८'

परशुराम ने राजा जनक के संरक्षण में शिव-धनुष रखा था। उसके टूटने से क्रोध संतप्त परशुराम दंड देने राम की ओर बढ़े। जोशीले लक्ष्मण ने उन्हें ललकारा। स्थिति बिगड़ती देख राम ने आगे आकर अपनी विनयशील कुशलता से परशुराम का क्रोध शांत किया।

Parashuram had kept the ShivDhanush in Raja Janak's custody. Outraged at seeing it broken, Parashuram stepped forward to punish Ram. Passionate Lakshman challenged Parashuram. Seeing the situation getting out of control, Ram came forward and pacified Parashuram in his humble and skillful manner.



चित्र

राम राज्याभिषेक समाचार से आनंदित अयोध्यावासी

६' X १०'

राम-राज्याभिषेक की घोषणा से अयोध्यावासी आनंद विभोर हुए। घर-द्वार सजने लगे। रंग-बिरंगे परिधान धारणकर नर-नारियों के समूह निकल पड़े। आभूषणों से सजी देवियाँ राम की आरती उतारने पंक्तिबद्ध हुईं। राम-सीता का अभिनंदन करने प्रजाजन उमड़ पड़े।

The people of Ayodhya were over whelmed with joy after being informed of Ram's coronation. Houses were gaily decorated. Men, women and children, in colourful garments, gathered to greet Ram and Sita.



डायोगमा

कोपभवन

१०' X १५' X ८'

कोपभवन में अस्त-व्यस्त अवस्था में कैकेयी ने क्रोध भरी वाणी में राजा दशरथ से कहा - “मुझे दिए दोनों वरों का अविलंब पालन करें। राम को चौदह साल वनवास भेजें व भरत को राज्य सौंपें।” सुनते ही दशरथ मूर्छित हुए। आशीष पाने आए राम ने स्थिति संभाली। भरत के लिए राज्य छोड़ा व स्वयं वनवास गमन के लिए तत्पर हुए।

In Kopbhavan, a dishevelled Kaikeyi bellowed, "Fulfill both your promises! Send Ram into exile for fourteen years, and enthrone Bharat immediately." Raja Dashratha was devastated. Ram, who arrived at the palace to seek his father's blessings, realised the gravity of the situation. He immediately offered the kingdom to Bharat and gladly set out for his exile in the forest.





कौटुम्बिक कलह निवारक राम, पतिप्रेम की प्रतिमा सीता तथा बंधुभाव के प्रतीक लक्ष्मण वनवास जाने निकल पड़े। सत्ता पाने की नहीं, कर्तव्य पालन की पराकाष्ठा थी। शोकाकुल प्रजाजन राह रोकने लगे। किन्तु कर्तव्य पालन की गति रोके न रुकी।

Ram, the preventer of familial strife; Sita, the epitome of a dedicated wife; and Lakshman, the symbol of brotherly love; set out for the forest. This was the ultimate example of dutifulness, as opposed to a 'hankering after power'. Though people wailed and saddened youth tried to hinder their progress, nothing could stop the duty-bound souls. This was Ram's message for the whole of mankind- Duty above all other considerations.



रिलीफ

कैकेयी-भरत संवाद

८'७" X ७'८"

भरत को ननिहाल से बुलवाया गया। अयोध्या में मुर्दनी छायी थी। केवल कैकेयी के महल में चहल-पहल थी। माँ ने भरत को अपना मन्तव्य बताया। भरत भड़क उठे। पिता के निधन व राम के वन-गमन से मर्माहत भरत राज्य छोड़ राम को लिवाने चल पड़े।

Bharat was called back from his maternal grandfather's palace. A macabre veil of silence had descended on the whole of Ayodhya. Only Kaikeyi's palace was buzzing with activity. Aggrieved by the death of his father and Ram's exile, Bharat became furious when his mother tried to explain her strategy to him. The throne did not attract him. He left Ayodhya to bring Ram back.



चित्र

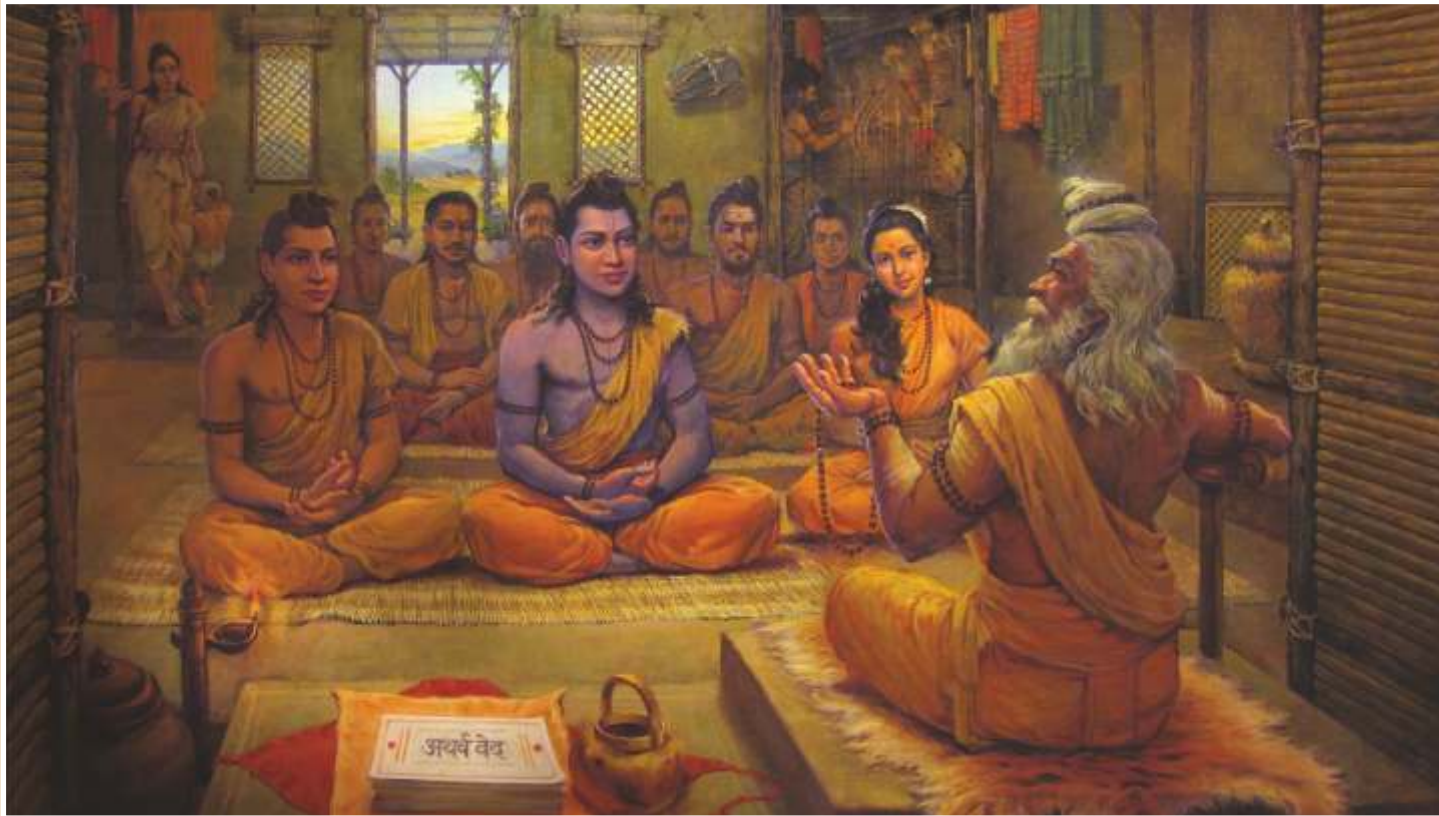
राम-निषाद मिलन

६' x ८'

सीता व लक्ष्मण के साथ राम गंगा तट पर पहुँचे। सभी मल्लाह पुलकित हुए। भाव-विभोर निषादराज ने राम के चरण छुए। राम ने उसे गले लगाया। ऊँच-नीच का भेद मिट गया। नाचते-गाते मल्लाहों ने उन्हें गंगा पार उतारा।

Ram reached the banks of the Ganga with Sita and Lakshman. The Nishad (boatmen), were over whelmed by Ram's Darshan. Joyously, Nishadraj touched his feet. Ram embraced him. The discrimination between high and low castes vanished. The boatmen took them across the Ganga.





चित्र

भारद्वाज आश्रम

६' x ८'

सीता व लक्ष्मण के साथ लंबे काल तक राम को वनवास में रहना था। मार्गदर्शन पाने वे प्रयाग में भारद्वाज आश्रम पहुँचे। प्रणाम किया। आतिथ्य पाया। चित्रकूट जाकर अत्रि मुनि व अनुसूइया से मार्गदर्शन पाने की सलाह मिली।

As Ram, with Sita and Lakshman, had to live in the forest for many years, they went to the Ashram of Bharadwaj Muni at Prayag to seek his advice. Arriving at the Ashram, they bowed before him. He received them and they enjoyed his hospitality. Bharadwaj Muni advised them to go to Chitrakoot and seek the guidance of Atri Muni and Anusuya.



चित्र

वनवासियों के बीच राम, लक्ष्मण, सीता

६' x ८'

राम आगमन की खबर वनवासियों में फैल गयी। उनकी भाव-विभोर टेलियाँ रामदर्शन के लिए पहुँचने लगीं। भेद-भाव मुक्त राम सबसे गले मिले। सभी ने अपनेपन की अनुभूति की। सबकी आँखों से आनंदाश्रु छलकने लगे।

The news of Ram's arrival spread like wildfire. Groups of tribals, both men and women, began to gather from different directions to have Ram's Darshan. Without any discrimination, Ram embraced them all. Everyone felt as if they were one. They were over whelmed by Ram's affectionate behaviour.



रिलीफ

अत्रि मुनि-अनुसूया मार्गदर्शन

१९'८" X ७'२"

माँ मंदाकिनी के पावन तट पर स्थित अत्रि-अनुसूइया आश्रम में वे पहुँचे। दोनों को प्रणाम किया। आशीष पाया।  
आतिथ्य के बाद विचार-विनिमय हुआ। राम, सीता व लक्ष्मण चित्रकूट में रहें, यह निर्णय हुआ।

Ram, Sita and Lakshman reached the hermitage of Atri Muni and Anusuya situated on the beautiful banks of the Mandakini. They sought their blessings and were advised to stay in Chitrakoot.





चित्र

भरत मिलाप

६' x ८'

भरत चित्रकूट पहुँचे। राम ने उन्हें गले लगाया। शोक विह्वल भरत बोले - “भैया, अयोध्या चलिए।” राम ने कहा - “मैं अयोध्या अवश्य आऊँगा, किन्तु चौदह साल बाद। तब तक तो तुम्हें ही अयोध्या का राज-काज संभालना है।” भरत के दुःख की सीमा न रही। ऐसे सत्तामोह-मुक्त एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही लोक हितैषी शासक सिद्ध होते हैं।

Ram embraced Bharat when the latter arrived in Chitrakoot. An aggrieved Bharat requested Ram to return to Ayodhya. Ram said, "I will return to Ayodhya only after the fourteen years are over. Till then, you will have to reign in Ayodhya." Bharat was disheartened. It was evidence that only duty-bound people can be honest leaders and successful rulers.



डायोगमा

पादुका ग्रहण

१०' X २०' X ८'

व्यथित हृदय भरत ने व्याकुल होकर राम से कहा – “भैया! कम से कम आप अपनी पादुकाएं ही मुझे दें। उन्हें राज-सिंहासन पर प्रस्थापित कर मैं आपके लौटने तक सेवक के रूप में राज-काज संभालता रहूँगा।” क्या नेतृत्व करने वाले लोग राम और भरत के आचरण से सबक सिखेंगे ?

Bharat said in anguish, "Brother! At least give me your padukas (sandals). I will place them on the throne as your symbol, and will serve the people of Ayodhya, and rule in your place until you return."



रिलीफ

सुवर्णमृग

७'१०" X १२'९"

चित्रकूट के बाद राम, लक्ष्मण और सीता नाशिक के सुरम्य वन में पहुँचे। पंचवटी में पर्णकुटी बनाकर रहने लगे। लक्ष्मण सुरक्षा संभालते रहे। एक दिन अचानक सीता की नजर सुनहरे हिरण पर पड़ी। उसे पाने के लिए वह व्याकुल हुई। राम उसका पीछा करने चल पड़े।

After living in Chitrakoot for a few years, Ram, Sita and Lakshman left. They reached a beautiful forest, Panchwati, at Nashik, and began to live there in a thatched hut. One day, while Lakshman was on guard, Sita suddenly spotted a golden deer. As she desired it, she asked Ram to catch it for her. Ram went in chase of it.





चित्र

सीता हरण

६' x ८'

कुछ ही देर बाद राम की करुण पुकार सुनायी दी। सीता घबड़ायीं। लक्ष्मण को मायावी षड्यंत्र का संदेह हुआ। सीता नहीं मानीं। सहायतार्थ जाने के लिए लक्ष्मण को मजबूर किया। कुटी की सीमा न लांघने की चेतावनी देकर लक्ष्मण भी चल दिये। षड्यंत्रकारी रावण साधुवेश में पहुँचा। सीता का अपहरण किया।

Shortly after Ram's departure, Sita and Lakshman heard him call out in distress. Sita was frightened for Ram. Lakshman, however, suspected a demonic ploy to catch them off guard. Sita disagreed, and forced Lakshman to go find Ram and help him. After warning Sita not to cross the boundary of the hut's compound, Lakshman went in the direction of the voice. The conspirator, Ravan, appeared before Sita in the guise of a monk and lured her out side the compound. Innocent Sita crossed the compound boundary and was abducted.



रिलीफ

जटायू भेट

७'.७" X ११'.३"

राम-लक्ष्मण वापस लौटे। कुटिया सूनी देख दोनों शोक संतप्त हुए। सीता की खोज में निकल पड़े। राह में घायल पड़े जटायु मिले। राम ने उन्हें सहारा दिया। जटायु ने सीता-हरण की जानकारी दी। रावण से हुआ संघर्ष सुनाया। जटायु ने प्राण छोड़े। राम ने उनकी अंत्येष्टि की।

When Ram and Lakshman returned, they found Sita missing. Stunned, furious and grief-stricken, they went in search of her. Along the way, they found Jatayu, lying mortally wounded. As Ram consoled him, Jatayu told him of his fight with Ravan, who had abducted Sita. He handed over the ornaments that Sita had dropped to Ram and breathed his last. Ram respectfully performed his last rites.



चित्र

शबरी के बेर

६' x ८'

राम-लक्ष्मण सीता की खोज में घूम रहे थे। राह में वनवासी शबरी की कुटिया मिली। जानकारी पाने राम रुके। वृद्ध शबरी ने छोट-छोट कर उन्हें मीठे बेर खिलाए। उसका आशीष पाकर राम-लक्ष्मण आगे बढ़े।

While Ram and Lakshman were searching for Sita, they came across a hut. it was the hermitage of an ascetic tribal woman called Shabari. They stopped thereto enquire if she had seen Sita. Shabari offered them sweet fruits. After accepting the hospitality and blessings of the old woman, they proceeded with their search.





रिलीफ

राम-सुग्रीव मिलन

७'६" X १०'९"

बालि द्वारा निष्कासित सुग्रीव अरण्यवास में थे। संयोगवश राम-लक्ष्मण सीता की खोज में उसी अरण्य में पहुँचे। सुग्रीव के साथी हनुमान से उनकी भेंट हुई। राम के व्यक्तित्व से हनुमान प्रभावित हुए। उन्होंने सुग्रीव को राम से मिलाया। राम ने अनाचारी बालि को दंडित कर सुग्रीव का राज्याभिषेक किया।

Ousted from his throne by his brother Bali, Sugreev lived in exile in the forest. In their search for Sita, Ram and Lakshman had, by chance, entered the same forest. Hanuman, a friend of Sugreev, saw them. His first sight of Ram impressed him deeply. He took Sugreev to Ram. Ram promised Sugreev that he would avenge him. He killed the immoral Bali and coronated Sugreev.



चित्र

समुद्रलंघन

६' X ८'

विशाल समुद्र पार कर लंका में प्रवेश करना असंभव था। हनुमान ने अपनी अद्वितीय क्षमता तथा बुद्धिमत्ता से असंभव को संभव बनाया। दुर्लभ समुद्र को पार कर लंका में प्रवेश किया।

It was impossible to cross the inviolable ocean and enter Lanka. Hanuman, with his exception skill, intelligence and courage, made it possible. He successfully entered Lanka.



चित्र

अशोक वाटिका में सीता - परिचय अंगुठी

६' x ८'

सीता की खोज में हनुमान ने पूरी लंका छान डाली। अंत में अशोकवन में शोकामग्न सीता के दर्शन हुए। हनुमान ने राम की अंगूठी प्रस्तुत कर अपना परिचय दिया। सीता आश्वस्त हुई। भविष्य के प्रति आशा जगी।

Hanuman scanned the whole of Lanka in his search for Sita. Ultimately, he found Sita mourning in the garden, Ashok Van. He presented Ram's signet ring to her and introduced himself. Sita was reassured that she would be reunited with Ram.





रिलीफ

विभीषण निष्कासन

८'२" X ११'

नैतिकता के पुजारी विभीषण ने रावण दरबार में राम से समझौते के लिए आग्रह किया। रावण भडक उठा। विभीषण को राज्य से निष्कासित कर दिया।

Convinced of the superiority of Ram's army, Vibhishan requested Ravan to ask Ram for a truce. A furious Ravan refused and unceremoniously expelled him from Lanka.



चित्र

विभीषण मित्रता

६' x ८'

लंका से निष्कासित विभीषण राम की शरण में आ रहे थे। अनजान व्यक्ति आते देख राम सैनिकों को संदेह हुआ। हनुमान उनसे मिले। भरोसा होने पर उन्हें राम से मिलाया। राम ने अग्नि को साक्षी बनाकर विभीषण को लंकाधिपति घोषित किया।

Exiled, Vibhishan went to see Ram. All of Ram's army were suspicious of the stranger. Hanuman met with him first. After being convinced of his intentions, he allowed him to meet Ram. Before a sacred fire, Ram declared him the monarch of Lanka.



डायोगमा

सेतु-बंधन

१०' X १५' X ७'

राम-सेना समुद्र तट पर पहुँची। समुद्र पार करना था। नल वास्तुशिल्पी था। उसने समुद्र का कम गहरा क्षेत्र खोज निकाला। सेतु-निर्माण प्रारंभ हुआ। छोटे-बड़े प्राणी भी सेतु निर्माण में जुट गए। गिलहरी तक ने योगदान दिया। देखते-देखते सेतु बन गया। राम-सेना लंका पहुँचने लगी।

Ram's army reached the coast. The ocean had to be crossed. Nal, an architect in the army, found a shallow path in the seabed. Ram, along with everyone in the army, helped in the construction of the bridge. It was ready in no time at all. The army marched towards Lanka.





रिलीफ

राम-रावण का युद्ध

८' X १३' X ३'

रावण के सभी सेनानी मारे गए। विविध शस्त्रास्त्रों से सुसज्ज्य स्थारुढ़ रावण स्वयं रणांगन में उतरा। राम केवल धनुष-बाण लिए पैदल ही युद्ध के लिए सिद्ध थे। बेजोड़ मुकाबला देख विभीषण घबड़ाए। राम ने उन्हें धैर्य धारण के लिए कहा। युद्ध ने भयंकर रूप ले लिया। घमंडी रावण टिक नहीं पाया। धीरोदात्त एवं रणबांकुरे राम के बाण से रावण का अन्त हुआ।

All the commanders of Ravan's army were killed. Mounted on a chariot and armed with various weapons, Ravan came out himself, to fight Ram and his army. Ram was on foot and armed only with his bow and arrows. Vibhishan was apprehensive, as it appeared to be an unequal fight. Ram asked him to have patience. The fight was a terrible one. Ultimately, the arrogant Ravan could not with stand the onslaught and Ram killed him with a well-aimed arrow.

## ॥ राम दरबार ॥

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम



श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

प्रजा का सुख ही राजा का सुख एवं प्रजा का हित ही राजा का हित था। राम-राज्य की यह विशेषता थी। प्रजा की सुरक्षा में ही राजा अपनी सुरक्षा मानता था। राजा का न कोई अलग से सुख था, न शौक।

During Ram Rajya, the interest and pleasure of the people, was the interest and pleasure of the king. The security of the people was not separate from the security of the king. There was no separate pleasures of the king from the pleasure of the general populace. This was the practice in Ram Rajya.



## २६ नक्षत्रो एवं पौधो की सूची

नक्षत्र का नाम	पौधे का नाम	नक्षत्र का नाम	पौधे का नाम
चित्रा	बेल	उत्तराषाढ़	कटहल
ज्येष्ठा	चीड़	रोहणी	जामुन
रेवती	महुआ	मघा	बरगद
भरणी	आंवला	पुष्य	पीपल
अनुराधा	मौलश्री	कृत्तिका	गूलर
धनिष्ठा	छायोकर	हस्त	रीठा
श्रवण	मदार	पुनर्वस	बांस
विशाखा	कटाई	अश्लेषा	नागकेशर
अश्वनी	कुचिला	स्वाती	अर्जुन
उत्तरा फाल्गुनी	पाकर	पूर्वा फाल्गुनी	ढाक
उत्तरा भाद्रपद	नीम	मृगशिरा	खैर
पूर्वाषाढ़	जलवेतवा	सतभिषा	कदम्ब
पूर्वा भाद्रपद	आम	आद्रा	शीशम
		मूल	साल

### नवग्रह पौध रोपण दिशा, पौधे का नाम एवं नग

उत्तर			
पश्चिम	केतु (कुशा) लहसुनिया	गुरु (पीपल) पुखराज	बुध (अपामार्ग) पन्ना
	शनि (शमी) नीलम	सूर्य (आक/मदार) माणिक	शुक्र (गूलर) हीरा
	राहू (दुर्वा) गोमेद	मंगल (खैर) मूँगा	चन्द्र (पलास) मोती
		दक्षिण	
		पूर्व	



# दीनदयाल शोध संस्थान (An ISO 9001: 2008)

**संकल्प :** “अपने लिए नहीं अपनों के लिए है। अपने वे है जो पीड़ित और उपेक्षित है”

**उद्देश्य :** समाज जीवन के सभी पहलुओं पर जनता की पहल एवं पुरुषार्थ के आधार पर युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना का अनुकरणीय नमूना सामूहिक प्रयत्न से तैयार करना।

## गतिविधियाँ

दीनदयाल शोध संस्थान नई दिल्ली : सामाजिक अनुसंधान एवं अनुप्रयोग केन्द्र

बालजगत, तारपुर: 2 से 21 वर्षीय बाल-किशोर तथा तरुण बच्चों का सर्वांगीण विकास

गोकुल शिशु वाटिका, बीड़ : नौकरी तथा व्यवसाय करने वाले माता-पिता के बच्चों का संस्कारक्षम पालन करना।

भक्तिधाम जयप्रभाग्राम, गोण्डा : मानव के सर्वांगीण विकास का सुगम माध्यम।

थारुविकास केन्द्र, इमलिया कोडर पंचपेडवा बलरामपुर, गोण्डा : थारु क्षेत्र में शिक्षा के माध्यम से अनुकरणीय व्यवस्था।

कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्रकूट, गोण्डा (उ.प्र.), बीड़ (महाराष्ट्र), सतना (म.प्र.): अलाभकर जोत को लाभकर बनाना (जलग्रहण प्रबन्धन,

कृषि, पशुधन, उद्यान, कृषिगत प्रशिक्षण)

उद्यमिता विद्यापीठ, दीनदयाल औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, चित्रकूट (म.प्र.), गोण्डा (उ.प्र.): स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण, लघुउद्योगों की

स्थापना में सहयोग, उत्पादनसह प्रशिक्षण केन्द्र।

आरोग्यधाम चित्रकूट (म.प्र.) जयप्रभा ग्राम, गोण्डा (उ.प्र.): आजीवन स्वास्थ्य की विधियों की खोज एवं जीर्णव्याधियों पर अनुसंधान,

आयुर्वेदिक औषधियों का मानकीकरण एवं परम्परागत चिकित्सा विधियों की खोज

रसशाला चित्रकूट (म.प्र.) जयप्रभा ग्राम, गोण्डा (उ.प्र.): उच्चगुणवत्ता युक्त औषधियों (बटी, भस्म, आसव, चूर्ण आदि) का जीएमपी मानक पर निर्माण।

गोवश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र चित्रकूट: भारतीय गौवंश में से 12 नस्लों का संरक्षण एवं संवर्धन।

जनशिक्षण संस्थान चित्रकूट, गोण्डा (उ.प्र.), बीड़ महाराष्ट्र : अशिक्षित, नवसाक्षर, बेरोजगार प्रशिक्षार्थीओं को व्यावसायिक तथा यांत्रिक प्रशिक्षण।

शैक्षणिक अनुसंधान केन्द्र चित्रकूट: सचल वैज्ञानिक प्रयोगशाला द्वारा गाँव में प्रयोग प्रदर्शन।

गुरुकुल संकुल चित्रकूट: ग्रामीण अंचल के छात्रों को आवासीय व्यवस्था सहित शैक्षणिक स्तर का उन्नयन एवं उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास।

सुरेन्द्रपाल ग्रामोदय विद्यालय चित्रकूट, चिन्मय ग्रामोदय विद्यामन्दिर जयप्रभा ग्राम, गोण्डा : ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों की शिक्षा के माध्यम से

युगानुकूल सामाजिक पुनर्रचना।

नन्ही दुनिया चित्रकूट : 3-5 वर्ष के शिशुओं की खेल-खेल में शिक्षा।

रामनाथ आश्रमशाला चित्रकूट: अनुसूचित जाति के बालक-बालिकाओं को निःशुल्क आवासीय व्यवस्था सहित शिक्षण, प्रशिक्षण एवं सर्वांगीण विकास।

परमानन्द आश्रम पद्धति विद्यालय गरीबां: अनुसूचित जनजाति के बालक-बालिकाओं को निःशुल्क आवासीय सुविधा में प्राथमिक स्तर तक जीवनोपयोगी शिक्षा।

कृष्णादेवी वनवासी बालिका आवासीय विद्यालय: अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को निःशुल्क आवासीय सुविधा सहित शिक्षित, प्रशिक्षित व संस्कारित कर सर्वांगीण विकास।

दिशादर्शन केन्द्र, चित्रकूट: संस्थान की गतिविधियों का संकलन एवं उनका आदान-प्रदान, दृश्य-श्रवण के माध्यम से प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना।

रामदर्शन चित्रकूट: मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना जीवन सार्थक बनायें।



**राष्ट्रव्रह्मि नानाजी देशमुख**

(११ अक्टूबर १९१६ - १७ फरवरी २०१०)

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

## • रामदर्शन अभिमत •

मा. अब्दुल कलाम (राष्ट्रपति) दिनांक- ०६.१०.२००५	Ram Darshan indeed inspires and will inspire generations...
मा. अटलबिहारी वाजपेयी (प्रधानमंत्री) दिनांक- २८.०३.२००३	रामदर्शन का अलौकिक चित्रण। बधाई।
मा. चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री) दिनांक- १६.०३.२००३	रामदर्शन रामकथा का एक उत्कृष्ट चित्रण है।
मा. भैरोसिंह शेखावत (उपराष्ट्रपति) दिनांक- २५.०९.२००२	रामकथा का अद्वितीय प्रदर्शन है। कलात्मक दृष्टी से अति उत्कृष्ट स्तर का है। इस अति सुंदर व प्रभावी प्रदर्शन को देखकर अति प्रसन्नता हुई है।
मा. ठाकूरदास बंग (सामाजिक कार्यकर्ता) दिनांक- ४.०१.२००६	रामचरित्र का अद्भुत पौराणिक चित्रण किया है।
मा. महंत परमहंस रामचंद्रदास (अयोध्या) दिनांक- १७.०६.२००१	जिसने रामदर्शन नहीं किया मानो वह चित्रकूट नहीं आया।
मा. स्वामी पुरुषोत्तमानन्द जी महाराज दिनांक- २३.०३.२००२	मानवीय आचरण के विश्वव्यापी प्रतीक का भावपूर्ण दर्शन आज यहाँ पाकर धन्यता प्राप्त हुई।
मा. चार्ली जॉन्सन (तुसा म्यूज़ियम के आर्टिस्ट) दिनांक- १०.०१.२००२	I can't imagine such quality work in the most backward area of this third world country
मा. नरेन्द्र कोहली (लेखक) दिनांक- १०.०४.२००२	चित्रकूट आकर बहुत कुछ देखा। मैंने माना कि चित्रकूट का सबसे दिव्य राममंदिर रामदर्शन है।
मा. रघुनाथ अनंत माशेलकर (शास्त्रज्ञ) दिनांक- २४.०४.२००३	राम एक मर्यादापुरुष थे। वे हमारे आदर्श हैं। 'रामदर्शन' देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई और मैं बहुत प्रभावित भी हुआ हूँ।
मा. रतन टाटा (उद्योगपति) दिनांक- १४.०४.२००२	The total impact is mind blowing and will transform the values of India in the years to come.
मा. नरेंद्र मोदी (मुख्यमंत्री) दिनांक- ११.०३.२००६	दिव्यता एवं भव्यता का सुंदर समन्वय। शिक्षा एवं दिक्षा भाव का जागरूक प्रयास। सबको प्रणाम
श्री. थॉमसन, (विदेशी अभ्यासक) दिनांक- २८.१०.२००३	A very impressive, moving and instructive exhibition. We hope it touches many hearts.

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम

श्री  
राम जय  
राम जय  
जय राम





# रामदर्शन

दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट

स्फटिक शिला के पास, जिला-सतना (म.प्र.) 485 331

फोन: 07670-265480, 265608

email: ramdarshan@chitrakoot.org

www.chitrakoot.org